P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

महात्मा गाँधी के ग्रामोद्योग संबंधी विचार और छत्तीसगढ़ में उसका क्रियान्वयन

राजेश्वरी
शोध छात्रा,
इतिहास विभाग,
शा. विश्वनाथ यादव तामस्कर
स्ना. स्व. महाविद्यालय, दुर्ग
छ. ग., भारत

किशोर कुमार अग्रवाल
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष,
इतिहास विभाग,
डॉ. खूबचंद बघेल शासकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भिलाई, दुर्ग, छ.ग., भारत

सारांश

गाँधी जी का जीवन सच्चे अर्थो में ग्रामीण विकास के लिए ही बना था। वे जीवंत पर्यन्त ग्रामीण विकास में लगे रहे। गाँधी जी के असहयोग तथा स्वदेशी आंदोलनों व खादी के प्रयोगों ने ग्रामीण आत्मनिर्भरता एवं आत्म विश्वास के विकास के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। गाँधी जी के आर्थिक विचार मुख्य रुप से भारतीय कुटीर उद्योग के विकास पर टिका हुआ था। छत्तीसगढ़ में भी गाँधी जी के इन विचारों का प्रभाव पड़ा और यहाँ के लोगों ने भी इन उद्योगों को अपनाया वे राष्ट्रीय आंदोलनों से भी जुड़े। इन ग्रामोद्योगों का प्रभाव वर्तमान समय में आर्थिक विकास के रुप में देख सकते है।

मुख्य शब्द : ग्राम उद्योग, आर्थिक विकास, मलबरी, ककून, ईरी, कोसा, अरण्डी, अर्जून।

प्रस्तावना

गाँधी जी के व्यक्तित्व में राजनेता, राजनीतिज्ञ, समाजसुधारक, वक्ता, लेखक, शिक्षक, मानवतावादी, विश्ववादी और सत्यान्वेषक सभी का अन्तर्भाव हो गया था। उनमें अपनें विश्वासों के अनुसार चलने का अद्भूत साहस था। वे हमेंशा अपने अन्तः करण के आदेशानुसार ही कार्य करते थे।[1] गाँधी जी एक ऐसे नेता राजनीतिज्ञ थे जिसकी सफलता न तो चालाकी पर आधारित थी और न किसी गलत उपायों पर। वे बुद्धिमान, दृढ़ संकल्पी, नम्र व अड़िग थे।[2] इसलिए जब तक गाँधी जी जिये वे एक संस्था थे। मरणोपरान्त वे विचार के रूप में हमारे बीच जीवित हैं।[3]

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि गाँधी जी बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे। जिस प्रकार उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था उसी प्रकार उनका चिंतन भी विविध विषयों से संबधित है। वे किसी विषय के विशेषज्ञ नहीं थे, परन्तु उनमें तत्सम्बंधी विचार विशिष्ट समस्याओं का समाधान बहुत सरल ढ़ंग से पेश करते थे। यहाँ उनके ग्रामोद्योग संबंधित आर्थिक विचार का वर्णन किया गया है।

ग्रामोद्योग देश के सकल उत्पादन का लगभग 8 प्रतिशत् विनिर्माण, उत्पादक का 45 प्रतिशत् और निर्यात का 40 प्रतिशत् योगदान देते है, वे कृषि के बाद रोजगार का सबसे बड़ा हिस्सा प्रदान करते है।[4] इस क्षेत्र में न्यूनतम निवेश के साथ रोजगार सृजन की अपार क्षमता है। ग्रामोद्योग में कुछ उद्योगों को छोड़कर अन्य सभी ग्रामोद्योग को वृहत आकार के उद्योगों द्वारा निर्मित वस्तुओं से प्रतियोगिता का सामना करना पड़ता है। सूक्ष्म, लद्यु और मध्यम उद्यम देश के आर्थिक विकास में सहभागी बन लाखों उद्योगों को आधार और रोजगार के कई अवसर और इसमें हाथकरघा उद्योग एक महत्वपूर्ण कड़ी है। जिसके माध्यम से उन छूटे पहलुओं व उन कमियों को भी दूर किया जा सकता है। जिसकी वजह से सूक्ष्म, लद्यु और मध्यम उद्यम देश के आर्थिक विकास में पूर्ण रूप से सहभागी नहीं बन पाए। भारत एक विकासशील देश है यहाँ पर सूक्ष्म, लद्यु और मध्यम उद्यम अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग बन चुके है। इसके माध्यम से ग्रामीण एवं अर्द्ध ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती बेरोजगारी एवं निर्धनता जैसी कई समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है वर्तमान समय में उद्योग अपने विकास की उच्चतम अवस्था में है इनका उत्पादन अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, ग्रामीण एवं घरेलु स्तर पर किया जा रहा है।

शोध का उद्देश्य

1. अंग्रेजों के सत्ता स्थापना के पश्चात् ग्रामोद्योगों का विनाश हो गया था। इससे भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था चरमरा गयी थी। गाँधी जी ने इस समस्या से लड़ने के लिये स्वदेशी का कार्यक्रम अपने आंदोलनों में प्रमुखता से लिया जिससे कुटीर उद्योग पुननिर्मित हो सकें।

2. गाँधी जी ग्रामोद्योगों के विकास को भारत के ग्रामों का विकास माना था। ग्रामोद्योग का विकास तब होता जब लोग तकनीकी ज्ञान से पूर्ण होते अतः गाँधी जी ने बुनियादी शिक्षा का संदेश दिया था।
3. गाँधी जी के आर्थिक विचारों का भारतीय योजना आयोग एवं राज्यों के द्वारा किस तरह लागू किया गया इसका अध्ययन किया जायेगा, साथ ही छत्तीसगढ़ राज्य में उसे किस रूप में लागू किया गया है। इसका भी अध्ययन करना शोधार्थी का उद्देश्य है।
4. छत्तीसगढ़ राज्य में शिक्षा के अभाव, गरीबी एवं जानकारी के आभाव के कारण शासन की विभिन्न ग्रामोंद्योग संबंधी योजनायों का अधिक लाभ नही उठा पाये है। इस शोध पत्र में इस दिशा पर भी प्रकाश ड़ाला गया है।

शोध का महत्व

1. ग्रामोद्योग निम्नवर्ग के लोगों की आर्थिक दशा को उन्नत करने का महत्वपूर्ण स्त्रोत है। अतः इस शोध पत्र के द्वारा छत्तीसगढ़ के लोगों की आर्थिक विकास को जानने की दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होगा।
2. इस शोध पत्र में ग्रामोद्योग से जुड़ी हुइ बातों के साथ शासन की नीतियों का जनता पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण भी किया जाऐगा।
3. ग्रामोद्योग के द्वारा देश के आर्थिक विकास की अपार संभावनाएं विद्यमान है। अतः इस पर संक्षेप में प्रकाश ड़ालकर उसके महत्व को बताया जायेगा।
4. शोध पत्र का विषय छत्तीसगढ़ के ग्रामोद्योग के विकास का अध्ययन है।

शोध प्रविधि

शोध पत्र की सफलता शोध प्रविधि पर निर्भर करती है। इस शोध पत्र को पूर्ण करने के लिए ऐतिहासिक एवं समाजशास्त्रीय अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है। जिसमें विभागीय प्रतिवेदन, समाचार पत्र, पत्रिकाए, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध प्रबंध आदि का प्रयोग किया गया है।

शोध परिकल्पना

1. छत्तीसगढ़ में ग्रामोंद्योग संबंधी कार्यक्रमों का सही तरीके से क्रियान्वयन न होने के कारण बेरोजगारी एवं निर्धनता जैसी कई समस्याएं आज भी समाज में विद्यमान है। विभिन्न कमीयों को समाज के सामने प्रस्तुत करना।
2. आज भी ग्रामोद्योग में आधुनिक तकनीकों के प्रयोगों का अभाव है जिसके कारण ग्रामोद्योग से जुड़े हुए ग्रामीणों का उचित विकास नही हो पाया है। विभिन्न सरकारी ग्रामोद्योग संबंधी योजना के क्रियान्वयन के संचालन होने पर भी ग्रामोद्योगों में संलग्न ग्रामीणों का उचित विकास नहीं हो पाया है।
3. छत्तीसगढ़ राज्य का पृथक निर्माण के पश्चात् राज्य में ग्रामोद्योग के विकास में गति आयी है। किन्तु अभी भी ग्रामोद्योग के विकास के लिए शासन की कृपा पर निर्भर रहना पड़ता है। अतः ग्रामों में स्वावलंबन नही आ पाया है।

गाँधी जी ग्रामोद्योगों को बढ़ावा एवं विकेन्द्रीकृत उत्पादन के समर्थक थे। इसलिए मानव श्रम के उपयोग की वकालत की एवं मशीनों के प्रवेश का इस संशय के साथ विरोध किया कि वह मानव श्रम को विस्थापित कर देगा, लेकिन उन्होने नयी तकनीक की भूमिका की प्रशंसा की यदि वे यथोचित, स्वदेशी हो एवं रोजगार और जीवन स्तर को प्रभावित न करें।

वस्त्र के लिए गाँधीजी की दृष्टि चरखा और खद्दर पर केंद्रित थी। प्रत्येक घर में हर व्यक्ति के पास एक चरखा हो तो वह अपनी आवश्यकता का वस्त्र दिन भर में थोड़ा सा समय देकर आसानी से कात और बुन सकता है। रोटी की समस्या का निदान वे उत्तम खेती एवं ग्रामीण कुटीर उद्योग–धंधों द्वारा करना चाहते थे। दैनिक जीवन की अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उन्होंने कुटीर और लद्यु उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया। निश्चित रुप से आज की बढ़ती बेरोजगारी के युग में कुटीर और लघु उद्योग व्यापक संख्या में रोजगार उत्पादक सिद्ध होंगे और स्थानीय कच्चे माल से वस्तुओं का उत्पादन संभव होगा जो अत्यंत सस्ता, उपयोगी एवं तत्काल उपलब्ध होने वाला होगा।

खादी उद्योग

गाँधी जी कहते हैं कि चरखा जन साधारण को गरीबी, अज्ञानता, बीमारी, और गंदगी से मुक्ति दिलाने में सहायता करेगा। लाखों व्यक्ति यदि अपने आलस्य को दूर नहीं कर सकते तो राजनैतिक स्वाधीनता का उनके लिए कोई मूल्य नहीं है। क्योंकि हिन्दुस्तान की आबादी का 80 प्रतिशत् लोग 6 महीने तक अनिवार्यतः बेकार रहते है। इसलिए ऐसे उद्योगों को जिन्हें भुलाया जा चुका है पुनर्जीवित कर आमदनी का जरिया बनाना होगा। इसी तरह उनकी सहायता कर सकते हैं। इसलिए गाँधी जी कृषि को पूरक काम के रूप में चरखे के इस्तेमाल पर हमेशा जोर देते थे।[5]

खादी और चरखा को गाँधी जी ने ग्रामोद्धार की आधारशीला माना है। खादी को जहाँ सारी आवश्यकताएँ पूर्ण करने वाली कामधेनु कहा है वहीं दूसरी ओर चरखे को ग्राम विकास में उस सूर्य के समान माना जिसके चतुर्दिक समस्त ग्रामीण गतिविधियाँ धूमती है। गाँधी जी ने खादी और चरखे को तत्कालीन स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल माना, खादी और चरखा लधु स्तरीय उद्योग के रूप में दोनों ही गाँधी जी को एक–दूसरे के पर्याय लगने लगे थे।[6]

गाँधी जी के अनुसार –''खादी ग्रामीण सौर मण्ड़ल का सूर्य है, अन्य उद्योग इसके ग्रहों के सामान है, ये सभी अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए खादी पर निर्भर रहते है, खादी के बिना किसी भी उद्योग का विकास नहीं हो सकता।[7] इस प्रकार गाँव के बाकी उद्योग खादी के आस – पास के ग्रह है। वे खादी को मद्द कर सकते है। खादी के बिना अन्य उद्योग बढ़ नहीं सकते।

गाँधी जी कहते थे कि एक उद्योग को जीवित करें तो अन्य उद्योग स्वयं ही जीवित हो जायेगें।[8] गाँधी जी ने खादी के प्रचार को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़कर लोगों को इस उद्योग को अपनाने के लिए प्रेरित किया। असहयोग आंदोलन के समय जब संपूर्ण भारतवर्ष इस

आंदोलन से जुड़कर स्वदेशी का प्रयोग एवं प्रचार कर रहे थे, उस समय छत्तीसगढ़ में भी पुरूष व महिलाएं घर – घर जाकर खादी वस्त्र के प्रचार कार्य में संलग्न रहे। धमतरी नगर व समीप के गाँवों की महिलाएं सूत कातती सन् 1921 ई. में रायपुर के रावणभाटा मैदान में खादी की प्रदर्शनी आयोजित हुई।[10]

यंग इण्डिया में गाँधी जी ने वर्णित किया है कि रायगढ़ के जो लोग उनसे मिलने गये थे उन्होंने गाँधी जी से कहा कि उनमें से कई लोगों ने गाँवों के अपने गरीब भाइयों द्वारा बुना हुआ कपड़ा पहना है। उन लोगों ने गाँधी जी को बताया कि गाँव के लोगों में खादी तो बहुत प्रिय हो गई है, परन्तु चरखा नहीं चल पा रहा है। लेकिन यदि गाँव वालों के मध्य प्रचार और अधिक अच्छे ढंग से किया जाये तो वह असानी से घर घर में उपलब्ध होगा।

गाँधी जी लिखते हैं कि मध्यप्रांत और छत्तीसगढ़ के लोगों में चरखे और हाथ करघों पर काम करने की विशेष योग्यता है।[11]गाँधी जी के जादुई व्यक्तित्व से प्रभावित होकर खादी के प्रचार – प्रसार के लिए छत्तीसगढ़ अंचल में भी अनेक खादी आश्रमों की स्थापना की गई। जिसमें धमतरी, मुंगेली, महासमुंद, रायपुर, राजिम, बिलासपुर, दुर्ग एवं अन्य स्थानों में भी अनेक देशभक्तों ने अपने निजी धन से आश्रम स्थापित किए। छत्तीसगढ़ अंचल में बसना खादी का प्रमुख केन्द्र बना। छत्तीसगढ़ के खादी उद्योग को उन्नत बनाने के लिए गाँधीवादी नेता पं. रविशंकर शुक्ल ने अहम् भूमिका अदा की। यहाँ का खादी उद्योग इतना दृढ़ होता गया कि वह मेरठ व कानपुर से टक्कर लेने की क्षमता रखने लगा।[12]

वर्तमान में भी यह उद्योग हाथकरघा बुनाई के परंपरागत धरोहर को अक्षुण्ण बनाए रखने के साथ ही बुनकर समुदाय के सामाजिक सांस्कृतिक परंपराओं को प्रतिबिंबित करता है। इसलिए छत्तीसगढ़ राज्य में खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड का स्थापना किया गया है। इसका मुख्य उद्देश ग्रामीण अंचलों में खादी तथा ग्रामोद्योग का विकास कर उन्नत तकनीक के द्वारा प्रशिक्षित कारीगरों एवं दस्तकारों तथा सूत कातने वाली महिलाओं के लिए रोजगार के व्यापक अवसर सृजित करना है। आर्थिक सर्वेक्षण 2017–18 के अनुसार छत्तीसगढ़ राज्य मे लगभग 17,747 करघों पर लगभग 53,241 बुनकर प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार में संलग्न है।[13] यह प्रदेश कोसा उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है, इस राज्य में जांजगीर – चांपा, एवं रायगढ़ जिला कोसा वस्त्र उत्पादक क्षेत्र है, तथा रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर, राजनांदगांव, महासमुंद, कवर्धा, धमतरी, अंबिकापुर एवं जगदलपुर सूती वस्त्र उत्पादन क्षेत्र है। राज्य का कोसा वस्त्र एवं जगदलपुर के परम्परागत वस्त्र राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात है।[14] छत्तीसगढ़ में बुनकरों के लिए विभिन्न योजनाएं क्रियान्वित किया गया है –

1. शासकीय वस्त्र प्रदान योजना,
2. टाटपट्टी का उत्पादन एवं प्रदान योजना
3. क्वंबल एवं ऊनी ब्लेजर के प्रोसेसिंग यूनिट की स्थापना,
4. एकीकृत हाथकरघा विकास योजना,
5. बुनकरो के प्रतिभावान पुत्र एवं पुत्रियों को प्रोत्साहन पुरस्कार योजना,
6. बुनकर स्वास्थ्य बीमा योजना,
7. डिजाईन एवं टेक्नॉलॉजी का विकास योजना आदि,
8. प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम,
9. मुख्यमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम,
10. कारीगर प्रशिक्षण,
11. खादी उत्पादन कार्यक्रम,
12. पं. दीनदयाल उपाध्याय ग्रामोद्योग शिल्प केन्द्र, (बांस कला केन्द्र)
13. विभागीस खादी ग्रामोद्योग विक्रय भंडार कार्यक्रम।[15]

ग्रामोद्योग की ओर से संचालित विभिन्न योजनाओं के जरिए न सिर्फ लोगों को रोजगार मिल रहा है बल्कि ग्रामीण पलायन भी थमा है। ग्रामीण सामुदायिक भावना पैदा करने के साथ ही ग्रामोद्योग आज ग्रामीण इलाकों में गैर कृषि रोजगार सृजन के सतत् स्त्रोत के रूप में एक महत्वपूर्ण संगठन के तौर पर कार्य कर रहा है।[16]

कोसा उद्योग

कोसा उत्पादन में छत्तीसगढ़ राज्य में द्वितीय स्थान है। प्रथम स्थान बिहार को प्राप्त है। विश्व में कोसा की सर्वोत्तम क्वालिटी भारत में ही पाई जाती है। भारत में भी प्रमुख उत्पादन छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड़, प. बंगाल और महाराष्ट्र में किया जाता है।

भारत में होने वाले कोसा उत्पादन में छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर जिले में उपलब्ध कोसा कोकून विश्व में सबसे बेहतरीन कोसा माना गया है। वहाँ आदिवासियों के जीविकोपार्जन का यह मुख्य व्यवसाय है। केन्द्रीय सरकार द्वारा संचालित राष्ट्रीय रेशम परियोजना द्वारा रेशम का बहुत विकास हुआ। अविभाजित मध्य प्रदेश ने रेशम उद्योग को बढ़ावा देने के लिए 1984 में 20 जिलों में रेशम उत्पादन का कार्य प्रारंभ किया। 1962 में गति प्रदान करने के लिए रेशम संचालनालय कार्यालय जगदलपुर तहसील में है।[17]

छत्तीसगढ़ का कोसा विदेशों में भी निर्यात किया जाता है। यह लद्यु सीमांत कृषकों के लिए अत्यंत एवं अतिरिक्त आय का साधन है।

रेशम ग्रामोद्योग ग्रामीण रोजगार के अवसर एवं रेशम विकास का आधार है। इस हेतु राज्य के अंतर्गत संलालनालय ग्रामोद्योग विभाग संचालित है। जिसका उद्देश ग्रामीण अंचलों में निवास कर रहे गरीब परिवारों को स्वरोजगार के साधन उपलब्ध कराना, रेशम योजनाओं को लद्यु एवं कुटीर उद्योग के रूप में ग्रामीण क्षेत्र में विकसित कर स्वरोजगार उपलब्ध कराना, कच्चे रेशम की मांग की पूर्ति हेतु सिल्क उत्पादन बढ़ाने के लिए अधोसंरचना निर्माण करना, उत्पादकता में वृद्धि हेतु नई तकनीक को मैदानी स्तर पर लागू करना है।

छत्तीसगढ़ राज्य में रेशम विकास हेतु अपनाई जा रही रणनीति –

1. नैसर्गिक टसर उत्पादन एवं परम्परागत कोसा कृमि पालन की गतिविधियों को बढ़ावा देना।
2. रेशम उद्योग की जनोन्मुखी योजनाओं को जन–भागीदारी एवं व्यावसायिक रूप देना।

3. प्रदेश में बुनकरों के आवश्यकता के अनुरूप रेशम के धागे के उत्पादन को बढ़ावा व उसे बुनकरों को उचित दर पर उपलब्ध कराना।
4. बाजारोन्मुखी उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु ककून तथा रेशम धागे के गुणात्मक सुधार लाना व कौशल उन्नयन एवं तकनीकी हस्तान्तरण हेतु निरंतर प्रयास करना।
5. रेशम कीट पालन द्वारा अतिरिक्त आय अर्जित कराने के उद्देश्य से निजी क्षेत्र में शहतूत पौधरोपण को बढ़ावा देना।
6. चयनित जिलों प्राकृतिक रैली/लरिया/बरफ कोसा फलों प्रगुणन कैम्प लगाना।
7. पालित ड़ाबा बीज प्रगुणन (सीड़ रीलिज प्रोग्राम) के माध्यम से नये वन क्षेत्रों में योजना का क्रियान्वयन करना।
8. रेशम उत्पादन में महिलाओं को सक्रिय भागीदारी बढ़ाने पर बल देना।
9. पालित टसर विकास हेतु नवीन विधाओं का समग्र विकास करना।
10. अरंड़ी रेशम विकास और विस्तार कार्यक्रम क्रियान्वयन।
11. उत्प्रेरण विकास कार्यक्रम के माध्यम से टसर/मलबरी/ईरी रेशम उत्पादन एवं गुण्वत्ता सुधार की दिशा में पहल।[18]

तालिका 1.1–रेशम उद्योग का क्रियान्वयन

वर्ष	पलित टसर लाख नग में	लाभान्वित हितग्राही	नैसर्गिक ककून उत्पादन कैंप	नैसर्गिक ककून उत्पादन	लाभान्वित हितग्राही	टसर रा–सिल्क एवं स्पन धागा मि. टन	मलबरी ककून उत्पादन	लाभान्वित हितग्राही
2012–13	581.443	20872	138	1999.77	62869	387.183	54488	2297
2013–14	586.026	18493	164	2048.41	83866	394.788	64911	2596
2014–15	634.780	22525	72	657.86	21469	226.788	66278	3457
2015–16	769.367	34587	168	693.82	29042	254.168	68918	3242
2016–17	874.002	33639	224	1110.16	44009	353.13	60501	2675
2017–18	851.543	34117	590	1975.802	46386	522.892	68639	2936

स्रोत–छत्तीसगढ़ शासन, आर्थिक एव सांख्यिकी संचालनालय, रायपुर , 2018–19, पृष्ठ – 165–167

कृषि

गाँधी जी कहते है कि यदि जमींन संबंधी कानूनो में समुचित सुधार कर दिया जाय, खेती की दशा सुधारी जाय और एक सहायक धंधे को तबदील कर दी जाये तो हमारा यह देश अपनी जनसंख्या से दूने लोगों का भरण पोषण कर सकता है।[19]

गाँधी जी कृषि के माध्यम से ग्रामीण जीवन को खुशहाल और अपने आप में पूर्ण ईकाई बनाने के समर्थक थे। उन्होने अपने आचरण से भी यही संदेश दिया। दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए भी वे प्रतिदिन खेती और बागबानी का काम करते थे।[20]गाँधी जी के विचारों से प्रभावित होकर यहाँ के किसानों के द्वारा भी कृषि की उन्नति का प्रयास किया गया। तत्कालीन समय में छत्तीसगढ़ के अंतर्गत रायपुर जिले में औसतन 25 लाख एकड़ भूमि में कृषि होती थी। यहाँ उड़द, तिवड़ा, गेहूँ, की खेती होती थी। ऋणग्रस्तता कृषकों की सर्वाधिक जटिल समस्या थी।[21]गाँधी जी ने इस समस्या से मुक्त होने का उपाय बताते हुए लिखा है कि यदि हर व्यक्ति अपनी दिनचर्या से कुछ समय सूत कातने में दे तो उसकी आमदनी बढ़ेगी, और देश को भी लाभ होगा साथ प्राकृतिक आपदा के कारण कृषकों को बहुत हानि उठानी पड़ती है। परन्तु चरखा सतत् चलते रहने वाली प्रक्रिया है।[22] इस प्रकार चरखा और सूत–कातना आमदानी बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण साधन है। साथ ही गाँधी जी कृषि में उत्पादन बढ़ाने का उपाय बताते हुए किसानों को गोबर खाद कचरे से निर्मित व जैविक खाद का प्रयोग हेतु प्रेरित करते थे।

गाँधी जी के द्वारा बताए हुए इन उपायों को अपनाकर न केवल उस समय वरन् वर्तमान में भी जैविक खाद का प्रयोग कर छत्तीसगढ़ राज्य व यहाँ के कृषक समृद्ध हो रहे है। वर्तमान समय में छत्तीसगढ़ की महिलाए भी स्वयं सहायता समूह के माध्यम से जैविक खाद बनाकर एक लाख रूपये तक हर माह कमा रही है।[23] परन्तु इन सबके बावजूद यहाँ रासायनिक उर्वरक का भी प्रयोग किया जा रहा है। जबकि जैविक उर्वरकों का प्रयोग करके भी अधिक मात्रा में फसल ले सकते है। गाँधी जी भी रासायनिक उर्वरक के प्रयोग के सख्त खिलाफ थे। वर्ष 2013–14 में छत्तीसगढ़ रासायनिक व जैविक उर्वरक की कुल खपत 240 कि.ग्रा./हेक्टेयर है। तथा कुल कृषक परिवार 37.46 लाख है।[24]

पशुपालन

गाँधी जी कहते है कि ग्रामीणों का जीवन निर्वाह खेती पर निर्भर होता है। और खेती पशुपालन पर निर्भर होता है। गाँधी जी का मानना था कि बढ़ती आबादी के कारण किसान के पास जितनी चाहिए उतनी जमीन नहीं है, किसान अपने घर या खेत में गाय या बैल नहीं रख सकते यदि रखते है तो अपने हाथों अपनी बर्बादी को न्यौता भी देता है, इस हालत में सहयोग तथा सामुदायिक पद्धति से पशुपालन करने से जगह भी बचेगी पशुओं की संख्या में वृद्धि भी होगी और परस्पर सहयोग द्वारा उसे दूध के दाम भी अच्छे मिलेंगें, इसके साथ ही पशुओं की रक्षा व नस्ल सुधार का कार्य भी आसान हो जाएगा।[25]

छत्तीसगढ़ में भी गाँधी जी को आर्दश मानकर यहाँ पशुपालन कार्य वर्तमान में बढ़ा। आज छत्तीसगढ़ के अधिकांश ग्रामीण परिवारों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन है।

अन्य ग्रामोद्योग

गाँधी जी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि लघु उद्योगों जैसे तिलहन का तेल उद्योग, गन्ने व शक्कर बनाना, चटाई उद्योग, धान से चावल निकालना, रस्सी बनाना, चमड़ा उद्योग, मधुमक्खी उद्योग, इनके माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था को पुनः सुसम्पन्न किया जा सकता है। अतः इन उद्योगों को प्रेरित एवं परिवर्धित करने का प्रयास किया। उन्होने लघु उद्योगों एवं ग्राम उद्योगों को पर्याप्त महत्व दिया।[26] इन उद्योगों के द्वारा ग्रामवासी स्वरोजगार प्राप्त कर रहे थे। वर्तमान समय में छत्तीसगढ़ की ग्रामीण जनता स्वरोजगार प्राप्त कर रहे है। महात्मा गाँधी कागज उद्योग पर देते थे। उनके बताए हुए उपायों के द्वारा छत्तीसगढ़ की महिलाएं आत्मनिर्भर हो रही हैं। महिला स्वयं सहायता समूह द्वारा आमदनी का यह एक जरिया बन गया है। कापी उद्योग अपना कर अब ये महिलाएं न केवल घर की जिम्मेदारी बखूबी संभाल रही है अपितु परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने में भी अपना योगदान दे रही हैं।[27] इसके अलावा छत्तीसगढ़ में लघु व कुटीर उद्योग धंधे प्रचलित है। इन उद्योगों को अंग्रेजों के शासन काल में कोई संरक्षण प्राप्त नहीं हुआ, वे अपने बलबूते पर जीविकोपार्जन की दृष्टि से संचालित होते रहे और ये धंधे पुश्तैनी व्यवसाय के रूप में आज भी चल रहे है। इनमें तांबे, कांसे के बर्तन, जेवर निर्माण मुख्य रूप से है।

लोगों को रोजगार प्राप्त कराने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न स्वरोजगार प्रशिक्षण प्रारंभ किया गया है। विभिन्न व्यवसायों में दिये जाने वाले अल्पकालीन प्रशिक्षण निम्नानुसार है –

तालिका 1.2–स्वरोजगार प्रशिक्षण हेतु व्यवसायों के नाम

1. चाट की दुकान	20. ट्रेक्टर मैकेनिक
2. भोजन निर्माण	21. घर की साज की संभाल
3. अपाहिजो अथवा बुजुर्गो की देखभाल	22. बागवानी एवं नर्सरी
4. इंग्लिश कोचिंग क्लासेस	23. पशुपालन/मुर्गी पालन
5. स्वयं सहायता समूह का लेखा संधारण	24. फुटकर विक्रेता
6. हेयर कंटिग सेलून/ब्यूटी पार्लर	25. मसाला उद्योग
7. चाय केंटिग एव ंनाश्ता केन्द्र योग शिक्षा	26. साफ्ट टायज
8. योग शिक्षा	27. कृत्रिम आभूषण
9. बच्चों की देखभाल (झूलाघर)	28. बेकरी कार्य
10. लॉन्ड्री कार्य	29. स्टेशनरी निर्माण
11. चाक निर्माण/मोमबत्ती निर्माण	30. रफूगिरी एवं रंगाई
12. घड़ीसाज	31. सिलाई कर्ढा
13. विद्युत यंत्र सुधारक	32. स्वेटर निर्माण
14. सायकल मरम्मत	33. मशरूम उत्पादन
15. स्कूटर/मोपेड (टू व्हीलर) रिपेयरिंग	34. ईट/खपरा निर्माण
16. कम्प्यूटर प्रशिक्षण	35. डिटर्जेट पाउडर निर्माण
17. स्क्रीन प्रिटिंग	36. वेल्डिंग
18. प्लंबर एवं सिनेटरिंग फिटिंग	37. मोटर कार मैकेनिक
19. गैस चूल्हा, कूकर एवं मिट्टी तेल व स्टोव रिपेयरिंग	38. मोबाईल रिपेयरिंग

स्रोत – छत्तीसगढ़ शासन, कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार विभाग, संचालनालय रोजगार एवं प्रशिक्षण प्रशासकीय प्रतिवेदन, 2008 – 09, पृष्ठ – 16

रोजगार प्रशिक्षण योजना के अंतर्गत प्राप्त आबंटन/व्यय एवं इससे लाभान्वितों की प्रगति को नीचे की तालिका में दर्शाया गया है –

तालिका 1.3–स्वरोजगार प्रशिक्षण योजना आबंटन/व्यय एवं लाभान्वितों की प्रगति

वर्ष	आबंटन (लाख रू. में)	व्यय (लाख रू. में)	प्रशिक्षणार्थी/लाभान्वित हितग्राहियों की संख्या
2004–05	32.00	24.98	3,000
2005–06	50.00	41.74	4,376
2006–07	66.16	57.26	6,317
2007–08	86.70	81.44	6,220
योग	234.86	205.42	19,913

स्रोत – छत्तीसगढ़ शासन, आर्थिक सांख्यिकी संचालनालय, 2007–08, पृष्ठ–54

इस तालिका से स्पष्ट होता है कि इस योजना के अंतर्गत प्राप्त आवंटन एवं व्यय में निरंतर वृद्धि हो रही है। 2004–05 में इस योजना के अंतर्गत 32 लाख रूपए आवंटन प्राप्त हुआ जो वर्ष 2007–08 में 86.70 लाख रूपए हो गया। इसके विरूद्ध व्यय 24.98 लाख से बढ़कर 81.44 लाख हो गया वर्ष 2004–05 से वर्ष 2007–08 तक कुल 234.86 लाख प्राप्त हुआ जिसके विरूद्ध 205.42 लाख रूपए व्यय किया गया। इस तरह 86.46 प्रतिशत् व्यय कर 19,913 हितग्राहियों को लाभान्वित किया गया।[28]

प्रशिक्षण के उपरांत छत्तीसगढ़ शासन द्वारा जिन विभागों में स्वरोजगार योजनाएं संचालित है, उनके अधिकारियों को उन योजनाओं के विषय में प्रशिक्षणार्थियों को संपूर्ण जानकारी देने के लिए आमंत्रित किए जाते है साथ ही अग्रणी बैंक के प्रतिनिधि को भी आमंत्रित कर इन प्रशिक्षित बेरोजगारों को प्राथमिकता के आधार पर ऋण उपलब्ध कराने के लिए अनुरोध किया जाता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न उद्योगों के नियोजकों से इन प्रशिक्षित बेरोजगारों को रूबरू कराने का प्रयास किया जाता है। जिसके अंतर्गत नियोजक वर्तमान आवश्यकता के अनुरूप प्रशिक्षित बेरोजगारों को अवगत कराते है।[29]

निष्कर्ष

इस प्रकार महात्मा गाँधी के विचारों को आत्मसात कर छत्तीसगढ़ ने आर्थिक स्वावलम्बन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण मुकाम हासिल किया है। भारत की आवश्यकताओं को पहचान कर भारतीयों के मनोविज्ञान को समझकर और उनकी आवश्यकताओं को समझते हुए महात्मा गाँधी ने अपने आर्थिक विचारों में स्वावलम्बन कृषि, पशुपालन, लघु एवं कुटीर उद्योगों को सतत् बढ़ावा देने की प्रेरणा दी थी, जिसका प्रभाव छत्तीसगढ़ पर भी पड़ा यहां भी इन उद्योगों को अपनाया गया और आज वर्तमान समय में भी इन उद्योगों की प्रासंगिकता बनी हुई है। वर्तमान समय में छत्तीसगढ़ में इन उद्योगों को कायम रखकर कई क्षेत्रों में आर्थिक रूप से तो समृद्ध हो ही रहा है साथ ही आज कुछ प्रमुख क्षेत्रों में देश व विश्व के सामने अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है।

ग्रामोद्योग के संचालन तथा आधुनिक तकनीक का प्रयोग करते हुए आर्थिक विकास संभव हो पाया है। साथ ही लोगों को रोजगार मिल पाना संभव हुआ है। बेरोजगारी की समस्या को बहुत हद तक कम किया गया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं। कि ग्रामोद्योग के माध्यम से आर्थिक उन्नयन संभव हुआ है। आज के वर्तमान परिवेश में उद्योगों की महत्ता, उनसे प्राप्त होने वाली आय, रोजगार और देश की आर्थिक स्थिति से समझी जा सकती है। ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामोद्योगों की भूमिका दिनों–दिन बढ़ती जा रही है, क्योंकि आज के प्रतिस्पर्धा के समय में अपनें अस्तित्व को बनाए रखना ही संभव नहीं हो पाता, ऐसी स्थिति में विपणन रणनीतियों का उपयोग करके अधिक से अधिक रिटर्न पाने हेतु विपणन तकनीकों का ज्ञान बहुत महत्पूर्ण हो गया है। इसके अलावा शासकीय नीतियों की अनभिज्ञता ने भी नये बाजार की तलाश से वंचित कर रखा है। वर्तमान समय में ग्रामोद्योगों की स्थिति देश की आर्थिक स्थिति में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान देना व रोजगार के नए–नए अवसरों को बढ़ावा देकर प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि कर समाज व देश की उन्नति का आधार बन एक नई दिशा प्रदान कर रही है।

सुझाव

छत्तीसगढ़ राज्य में ग्रामोंद्योगों की स्थिति सुधारने के लिए निम्नलिखित कार्य किये जाने चाहिए।

1. छत्तीसगढ़ के लोगो को ग्रामउद्योग संबंधी कार्य शाला खोलने एवं औजार खरीदने की, सस्ती ब्याज दर पर ऋण दिलाने की व्यवस्था की जानी चाहिए। इस कार्य में सहकारी शाखा एवं व्यापारिक बैंको की अच्छी भूमिका हो सकती है।
2. इन्हें आवश्यक कच्चा माल उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जानी चाहिए।
3. ग्रामीणों के लिए सहकारी समितियाँ संगठित किया जाए जिनसे इनकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो सके।
4. ग्राम उद्योगो में संलग्न ग्रामीणों को आधुनिक उत्पादन तकनीक का प्रशिक्षण सरकार द्वारा दिलवाने की चेष्टा की जानी चाहिए।
5. इन्हे कर्ज के भार से मुक्त कराने का कार्य संस्थागत शाख के विस्तार द्वारा किया जाना चाहिए।
6. इन्हे पढ़ाने और शिक्षित कराने की दिशा की ओर काम किया जाना चाहिए।

अंत टिप्पणी

1. *राधाकृष्णन, एस., महात्मा गाँधी : सौ वर्ष, सर्वोदय साहित्य प्रकाशन वाराणसी, 1969, पृष्ठ – 98*
2. *गोयल, सुनील, एवं गोयल, संगीता, आधुनिक भारत और गांधी जी, आर. बी. एस. ए. पब्लिशर्स, 2002, पृष्ठ – 246*
3. *राधाकृष्णन, एस, महात्मा गाँधी : सौ वर्ष, साहित्य प्रकाशन वाराणसी, 1969, पृष्ठ – 102*
4. *छत्तीसगढ़ शासन, आर्थिक एव सांख्यिकी संचालनालय, रायपुर , 2013 – 14, पृष्ठ – 75*
5. *जैन, यशपाल, गाँधी संस्मरण और विचार, साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1998,पृष्ट – 7*
6. *शर्मा, वीरेन्द्र, भारत के पुननिर्माण में गाँधी जी का योगदान, पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, 1984, पृष्ठ – 142*
7. *हिंगोरानी, आनंद, द गास्पेल ऑफ स्वदेशी, भारतीय विद्या भवन बाम्बे 1967, पृष्ठ –104*
8. *अग्रवाल, शिखा, एवं अलका, गाँधी दर्शन विविध आयाम, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर राजस्थान, 1999, पृष्ठ – 56*
9. *रोधियाल, संतोषी, असहयोग आंदोलन में छत्तीसगढ़ की महिलाओं का योगदान, अप्रकाशित शोध प्रबंध, पं. र.शु.वि. रायपुर, 2003, पृष्ठ 39*
10. *वर्मा, भगवान, सिंह, छत्तीसगढ़ का इतिहास, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल, 2003,पृष्ठ – 216*
11. *गाँधी, मोहनदास, करमचंद, संपूर्ण गाँधी वांड्मय, खण्ड –27, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली, 1971, पृष्ठ – 53*

12. शुक्ला, मनोज, कुमार, छत्तीसगढ़ में सांस्कृतिक संचेतना के प्रणेता पं. रविशंकर शुक्ल, अप्रकाशित शोध प्रबंध, पं.र.शु.वि. रायपुर, 2005, पृष्ठ – 159
13. छत्तीसगढ़ शासन, आर्थिक एव सांख्यिकी संचालनालय, रायपुर , 2018 – 19, पृष्ठ – 167
14. छत्तीसगढ़ शासन, आर्थिक एव सांख्यिकी संचालनालय, रायपुर , 2013 – 14, पृष्ठ – 85)
15. छत्तीसगढ़ शासन, आर्थिक एव सांख्यिकी संचालनालय, रायपुर , 2018 – 19, पृष्ठ – 168 –170
16. कुरूक्षेत्र, (मासिक पत्रिका), ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली फरवरी 2013, पृष्ठ – 23
17. सोनेकर, बी. एल. एवं महिलांगे, रंजना, छत्तीसगढ़ राज्य में कोसा उद्योगों की उत्पादन स्थिति, शोध पत्र, ए. वी. पब्लिकेशन रायपुर, अक्टुबर 2013, पृष्ठ–52
18. छत्तीसगढ़ शासन, आर्थिक एव सांख्यिकी संचालनालय, रायपुर , 2018–19, पृष्ठ – 165–167
19. गँधी, मोहनदास, करमचंद, यंग इण्डिया, आत्म संयम सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्ली 1954, पृष्ठ – 118
20. योजना, (मासिक पत्रिका) सुचना भवन नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ – 67
21. शुक्ला, मनोज, कुमार, छत्तीसगढ़ में सांस्कृतिक संचेतना के प्रणेता पं. रविशंकर शुक्ल, अप्रकाशित शोध प्रबंध पं. र. शु. वि. रायपुर, 2005, पृष्ठ – 164
22. गँधी, मोहन, दास करमचंद, संपूर्ण गाँधी वाड़मय, खण्ड – 26, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली, 1968, पृष्ठ – 63
23. छत्तीसगढ़, शासन, जनमत, जनसंपर्क संचालानालय रायपुर, नवम्बर 2012, पृष्ठ – 54,55
24. छत्तीसगढ़ शासन, आर्थिक एव सांख्यिकी संचालनालय, रायपुर , 2013 – 14, पृष्ठ – 38
25. गाँधी, महात्मा, मेरें सपनों का भारत, पूर्वोक्त, पृष्ठ – 114 – 115
26. गाँधी, महात्मा, मेरे सपनों का भारत, पूर्वोक्त, पृष्ठ 92
27. छत्तीसगढ़, शासन, जनमत, जनसंपर्क संचालानालय रायपुर, नवम्बर 2012, पृष्ठ – 54
28. छत्तीसगढ़ शासन, आर्थिक सांख्यिकी संचालनालय, 2007–08, पृष्ठ–54
29. छत्तीसगढ़ शासन, कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार विभाग, संचालनालय रोजगार एवं प्रशिक्षण प्रशासकीय प्रतिवेदन, 2008 – 09, पृष्ठ–4